इकाई 14 छंद : स्वरूप और प्रकार

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 छंद का आशय

14.3 छंद के प्रकार

14.3.1 मात्रिक छंद

14.3.2 प्रमुख मात्रक, छंद के लक्षण और उदाहरण

14.3.3 वर्णिक छंद

14.3.4 प्रमुख वर्णिक छंद : लक्षण और उदाहरण

14.4 काव्य में छंद का महत्व

14.5 छंद की विकास यात्रा

14.6 सारांश

14.7 अवधारणात्मक शब्द

14.8 उपयोगी पुस्तकें

14.9 बोध प्रश्न

14.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई में छंद के स्वरूप तथा उसके प्रकारों की जानकारी दी जा रही है। इस इकाई को पढ़कर आप छंद का तात्पर्य समझ सकेंगे :

- काव्य के रचना-विधान, लय तथा गति की महत्ता का ज्ञान कर सकेंगे,
- छंद की कुछ प्रमुख भेदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे,
- छंद के इतिहास से परिचित हो सकेंगे, और
- छायावाद के बाद छंद से कविता का अलगाव, उसकी लोकप्रियता को क्षीण करने में किस तरह प्रभावी हुई उसका भी ज्ञान होगा।

14.1 प्रस्तावना

छंद और कविता का गहन संबंध है। वैदिक साहित्य में छंद की महत्ता बताई गई है और छन्द को वेद में छान्दस कहा गया है। यहाँ तक कि ऋक, प्रतिशाख्य में छंद को ऋषि मान लिया गया है। समय-समय में इसकी नई परिभाषाएँ भी गढ़ी गई

BHDC-106.indd 177 19-03-2021 08:51:39

हैं। वैदिक साहित्य में छंद रचना में अक्षर संयोजन मुख्य था। लयात्मकता के लिए आकार का उदात्त (उच्चता) अनुदात्त (निम्नता) स्वरित, उच्चारण विधि थी। वैदिक में त्रिष्टुप और विराज दो प्रमुख छंद थे। त्रिष्टुप में चार चरण, प्रत्येक चरण में। अक्षर, कुल 44 अक्षर थे। विराज में दो ही चरण थे, प्रत्येक चरण में 10 अक्षर, कुल 20 अक्षर थे। गायत्री, अनुष्टुप, अष्णिक वृहती भी प्रमुख छंद थे। संस्कृत में छंदों का विधान गणात्मक है। प्राकृत–अपभ्रंश में गणात्मक (वर्णिक छंदों) के स्थान पर मात्रिक (मात्रा गणना पर आधारित) छंदों के प्रयोग को अधिक महत्व दिया गया। हिंदी में दोनों परंपराओं को ग्रहण किया गया। छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने छंद के बंधन से कविता को मुक्त करने का आह्वान किया किंतु वे छंद की लय और गीतात्मकता को पूरी निष्ठा से अपनाए रहे। समकालीन हिंदी कविता में छंद मुक्त होने का आग्रह है किन्तु लय की मान्यता अभी भी है। कालक्रम से छंदों की संख्या में वृद्धि होती गयी। वृद्धि का कारण यही है कि कवियों ने वर्ण तथा मात्राएँ घटा-बढ़ाकर अपने भाव के अनुकूल नए-नए छंदों की रचना की। पृथ्वीराज रासो तथा रामचन्द्रिका में विविध छंदों की रचना की। पृथ्वीराज रासो तथा रामचन्द्रिका में विविध छंदों के प्रयोग हुए हैं। रीतिकालीन आचार्य कवि केशवदास की रामचन्द्रिका को छंद का अजायबघर कहा गया है। छंद की उपेक्षा के कारण ही आधुनिक युग में कविता की लोकप्रियता क्षीण हुई। छंदवद्ध काव्य का स्मरण करना सरल होता है। छंद की परंपरा और महत्ता के कारण यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि छंद की परिभाषा तथा स्वरूप की जानकारी प्राप्त की जाए। उन प्रमुख छंदों से भी अवगत होने की अपेक्षा है जिनका प्रयोग हिंदी के प्रमुख कवियों ने किया है। छंद का ज्ञान काव्यशास्त्र का प्रमुख भाग है। इसका संबोधन काव्य-शिल्प से अधिक है।

14.2 छंद का आशय

छंद शब्द के मूल में छदि धातु है। 'छदि के कई अर्थ बताए गए हैं। निघण्टु (शब्दकोश) में छंद को भी धातु (मूल क्रिया) माना गया है। छंद का अर्थ है बंधन, वास्तव में छंद मात्राओं तथा वर्णों का सुनियोजित प्रवाहपूर्ण लयात्मक गठन (बंधन) है। जो आचार्य छदि से इसे उत्पन्न मानते हैं, वे अपेक्षाकृत अधिक गंभीर तथ्य को उजागर करते हैं। आचार्य सायण का कथन है कि 'अपभृत्यं वारचितुं आच्छादयति इति छंद : अर्थात् कवि और उसकी कृति को जो अपमृत्यु से बचाता है, वह छंद है। कवि और कविता को छंद असमय मृत्यु (नष्ट होने) से बचाता है। प्राचीन समय में कविता को स्मृति में सुरक्षित रखा जाता था। छंदमय रचना को याद रखना आसान होता है। छंद कवि की संपूर्ण भावनाओं तथा अभिव्यक्तियों को आच्छादित करता है, उसे पूरी तरह से ढ़ककर रक्षित करता है। हिंदी साहित्य कोश में डॉ. जगदीश गुहा ने छंद की व्यवस्थित परिभाषा दी है–

अक्षर, अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा, मात्रा गणना तथा यति-गति आदि से संबंधित विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य रचना छंद कहलाती है। सुमित्रानंदन पंत ने पल्लव की भूमिका में छंद के विषय में महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किया है। कविता हमारे प्राणों का संगीत है, दंद हृदकंचन, कविता का स्वभाव ही छंद में लयमान होना है। श्री गौरीशंकर द्विजेन्द्र सरल तरीके से छंद का आशय स्पष्ट करते हैं–

छंद वह लयात्मक, नियमित तथा अर्थपूर्ण वाणी है जिसमें आबद्ध होकर कोई वाक्य या वाक्यांश पद्य का रूप चारण और आंतरिक अन्विति को लय कहते हैं।

BHDC-106.indd 178 19-03-2021 08:51:39

14.3 छंद के प्रकार

आचार्य पिंगल जिनके नाम पर छंदशास्त्र का दूसरा नाम पिंगल-प्रचलित हुआ है, छंद पर लेखन करते हुए वैदिक छंद तथा लौकिक छंद शीर्षक से छंदों पर प्रकाश डाला। हिंदी के रीतिकालीन आचार्य केशवदास ने छंदमाला में दो भेदों का निर्देश किया है– वर्णवृत्त और कलावृत्त। आधुनिक छंदशास्त्री जगन्नाथ प्रसाद भानु ने लिखा है–

छंद अहहिं द्वैविध जगमाहीं
मत्रिक वर्णिक सुनत सुहाही

छंद के प्रमुख दो भेद ही मान्य हैं–

1) मात्रिक छंद

2) वर्णिक छंद

14.3.1 मात्रिक छंद

मात्रिक छंद में मात्राओं का निश्चित और नियमित विधान होता है। जगन्नाथ प्रसाद भानु ने मात्रिक छंद के विषय में बताया है कि जहाँ चारों चरणों में एक समान मात्राओं की प्राप्ति हो किंतु वर्णों का कोई एक समान क्रम न हो वहाँ मात्रिक छंद होता है– यथा

मिलै एक सम मत्त जहँ, चहुँ चरणनि निर द्वंद्व
वरणनि क्रम नहिं एक सम, सोई मात्रिक छंद।

आँसू से मात्रिक छंद की पंक्तियाँ उद्धृत हैं–

	मात्रा	वर्ण
शशि मुख पर घूँघट डाले	14	11
अंचल में दीप छिपाए	14	9
जीवन की गोधूलि में	14	8
कोतूहल से तुम आए	14	9

मात्रिक छंद में चार चरण माने जाते हैं, यह आवश्यक नहीं कि चारों चरणों में मात्राएँ समान हों। आधुनिक छंद विचारकों ने इस तथ्य को दृष्टि में रखकर मात्रिक छंद के तीन भेदों निर्देश किया है–

सममात्रिक छंद : जिन छंदों के चारों चरणों की मात्राओं की संख्या तथा नियोजन क्रम समान हो, उन्हें सममात्रिक छंद कहा जाता है। चौपाई इसका उत्तम उदाहरण है। चौपाई में चारों चरणों में 16, 16 मात्राएँ होती हैं।

विषम मात्रिक छंद : जिन छंदों के चरणों की मात्राएँ समान न हों, उन्हें विषम मात्रिक कहा जाता है। कुंडलिया तथा छपाय उसके अंतर्गत आते हैं।

अर्धसममात्रिक छंद : जिन मात्रिक छंदों में सम-सम एवं विषम-विषम चरणों में मात्राएँ समान हो। सम का विषम का अर्थ है पहला और तीसरा चरण। दोहा, सोरठा, वरवै इसी प्रकार के छंद हैं।

BHDC-106.indd 179 19-03-2021 08:51:39

14.3.2 प्रमुख मात्रक, छंद के लक्षण और उदाहरण

स्ममात्रिक छंद :

चौपाई : यह हिंदी साहित्य में बहुप्रचलित छंद है। उसमें प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। यह सममात्रिक छंद है अर्थात् चारों चरणों में समान मात्राएँ होती हैं। चरण के अंत में ह्रस्व, दीर्घ स्वर (जगण– ।S1) अथवा तगण (SS।, दीर्घ दीर्घ ह्रस्व नहीं होना चाहिए)।

16 16

उदाहरण – S।। ।।।। ।।। ।SS ।।। ।।। ।।। ।।SS

बंदहुँ गुरूपद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।

अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भवरुज परिवारू।

प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ हैं। '।' ह्रस्व मात्रा का चिह्न है, यह एक मात्रा का सूचक है। 'S' दीर्घ स्वर का चिह्न है यह दो मात्राओं का सूचक है।

चौपाई : यह पंद्रह मात्राओं का छंद है। चारों चरणों में बराबर मात्राएँ अर्थात् पंद्रह-पंद्रह होती हैं। चरण के अंत में गुरु-लघु का विधान पाया जाता है। इसका अन्य नाम जयकरी छंद भी है।

।।S ।। ।। ।S ।S। ।।S S ।।S S S।

उदाहरण– जिनके बल पर खड़ा समाज। रहती है सुचिता की लाज।।

रोला : इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। पूर्व समय में 11, 13 मात्राओं पर यति का विधान था किंतु अब इसकी मान्यता नहीं है।

उदाहरण – S ।। S SS ।S S। ।। S SS

हो तन से मान्य मुक्त और मन से नारी।

जब तक बनती नहीं इष्ट गति की अधिकारी।

नर की संपत्ति सदा, हीन नर तुल्य रहेगी।

यों ही अत्याचार असुर के विवश रहेगी।

लावनी : (राधिका) इस छंद के प्रत्येक चरण में 22 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण में 13,9 पर विराम होता है। लावनी को राधिका छंद भी कहते हैं–

उदाहरण– ।। SS S ।। S।। SS S

उन सीता को निज मूर्तिमती माया को,

प्रणय प्राणा को और कांत काया को।

यों देख रहे थे, राम अटल अनुरागी,

योगी के आगे अलख ज्योति ज्यों जागी।

रूपमाला : यह 24 मात्राओं वाला छंद है। 1 और 10 मात्राओं के बाद यति होती है। प्रत्येक चरण के अंत में गुरु-लघु रखने का विधान है।

उदाहरण– ऽ।ऽ ऽ ऽ।।। ऽ ।ऽ ।। ऽ ऽ।

चूमता था भूमितल को, अर्ध विधु सा भाल।

बिछ रहे थे प्रेम के दृग, जाल बनकर बाल।।

गीतिका : 14, 12 की यति से युक्त 26 मात्राओं वाले छंद को गतिका कहते हैं। चरण के अंत में लघु एवं गुरु का सिन्यास आवश्यक माना गया है।

ऽ ऽऽ ऽ।ऽ ऽऽ ऽ। ।।ऽ ऽ।।

उदाहरण – हे प्रभा आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिए।

शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।।

हरिगीतिका : इसमें प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं। 14 और 12 पर यति होती है। चरणांत में लघु और गुरु होना चाहिए।

ऽ।। ।।। ऽ ऽऽ ।। ऽ।ऽ ऽऽऽ ऽ।ऽ

उदाहरण– मानस भवन में आर्य जन जिसकी उतारे आरती।

भगवान् भारतवर्ष में गूँजे हमारी आरती।।

सार : यह भी 28 मात्राओं वाला सममात्रिक छंद है। हरि गीतिका के समान ही इसमें 16, 12 पर यति होती है। इसमें अंत में दो ग्रक का विन्यास होना चाहिए। सूरदास ने इस छंद का विशेष रूप से प्रयोग किया है।

।ऽ ।।। ।।ऽ ।। ।। ।। ।। ऽ ऽ। ।ऽऽ

उदाहरण – सदा रहति वरषा रितु हम पर जब तें स्याम सिधारे।

दृग खंजन न रहति निसि बासर कर कपोल भए कारे।।

वीर (आल्हा) छंद : इसमें 31 मात्राओं वाला छंद है। 16,15 पर यति होती है। अंत में गुरु-लघु का विधान है।

ऽ। ।। ऽऽ ।ऽ ऽ। ऽ ऽ। ।ऽऽ। ।।ऽ।

उदहारण– दोउ पद धावै बड़े प्रेम ते स्वामि कृष्णचन्द्र महराजे।

चक्र सुदर्शन लेकर डोलत साधत संतन के सब काज।।

अर्धसम मात्रिक छंद

बरवै : इस छंद में 19 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण में 12-12 मात्राएँ दूसरे और चौथे चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं। अंत में, ।ऽ। या ऽऽ। स्वर होने चाहिए।

उदाहरण – प्रेम प्रीति को बिरवा चले लगाये।

सींचन की सुधि लीजै, जति कुम्हिलाय।

दोहा : इसमें पहले चरण तथा तीसरे चरण में 13 मात्राएँ और दूसरे एवं चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण – कहत नटत रीझत जिझत, मिलत खिलत, लजियात।

भरे भौंन में करत हैं, नैनन ही सों बात।।

BHDC-106.indd 181 19-03-2021 08:51:39

सोरठा : इस छंद के विषय चरणों में 11-11 तथा समचरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं। यह दोहा का उल्टा है। यह 24 मात्राओं वाला छंद है।

उदाहरण – ऽ ऽ । । । ।ऽ। ।ऽ ऽ। ।। ऽ। ।।

बंदौ गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नट रूप हरि।

महा मोहतम पुंज जासु वचचन रविकर निकर।।

उल्लाला : यह 28 मात्राओं से निर्मित छंद है। इसके विषय चरणों (अर्थात् पहले और तीसरे चरण) में 15 मात्राएँ तथा समचरणों (अर्थात् दूसरे और चौथे चरण में) 13-13 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण – ।।ऽ ।।ऽ। ।ऽ। ऽ ।।ऽऽ ।। ऽ। ऽ

करते अभिषेक प्योद हैं, बलिहारी उस वेश की।

हे मातृभूमि तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।।

विषम मात्रिक छंद

कुंडलिया : इस छंद का निर्माण रोला तथा दोहा छंदों के योग से होता है। दोहे के चौथे चरण को रोला के प्रथम चरण में रखकर दुहराया जाता है। दोहे का प्रथम चरण ही रोला के अंत में रखा जाता है। इसमें छः चरण होते हैं।

उदाहरण– तुकबंदी का बढ़ रहा, कविता में अतिजोर ।

लगे नाचने मुर्ग थी समझ स्वयं को मोर।।

समझ स्वयं को मोर अर्थ तक नहीं जानते।

पढ़ औरों के गीत गर्व से रस बखानते।।

कहैं कपिल समझाय चल रही दल बंदी।

कविता होती आज हँस रही तुक बंदी।।

छप्पय : इस छंद में 9 चरण होते हैं। यह भी यौगिक छंद हैं इसमें रोला और उल्लाला को जोड़ दिया जाता है। प्रथम चार पंक्तियाँ रोला की तथा अंतिम दो पंक्तियाँ उल्लाला छंद की होती हैं–

उदाहरण– नीलाम्बर परिधानहरित तट पर सुंदर है।

सूर्य चन्द्र युग मुकुट में खला रत्नाकर है।

नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारे मंडल हैं।

बन्दी विविध बिहंग शेषफन सिंहासन हैं।

करते अभिषेक प्योद हैं, बलिहारी इस वेश की।

हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।।

14.3.3 वर्णिक छंद

जिसके प्रत्येक चरण का निर्माण वर्णो या अक्षरों की निश्चित व्यवस्था के अनुसार होता है। इसमें मात्रा की स्थिति प्रधान नहीं होती है। तीन-तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं। लघु तथा दीर्घ वर्णों की क्रमिकता को ध्यान में रखकर गणों की संख्या आठ मानी गयी है :

BHDC-106.indd 182 19-03-2021 08:51:39

1) यगण ।SS 2) मगण SSS 3) तगण SS।

4) रगण S।S 5) जगण ।S। 6) भगण S।।

7) नगण ।।। 8) सगण ।।S

गणों को समझने के लिए एक सूत्र है– यमाताराजमान, सलगम् इसमें एक अक्षर लेकर अगले दो मिला लें। जैसे– यमाता, मातारा, ताराज, राजमा, जमान, मानस, नसल, सलगम्।

वर्णिक छंदों में समवर्णिक, विषम वर्णिक, अर्धसम वर्णिक भेद किए जाते हैं। जिन छंदों के चारों चरणों में वर्णों की संख्या समान रहती है; जैसे– मंदा क्रान्ता ऐसे छंदों की सम वर्णिक कहा जाता है। जिन छंदों में वर्णों (अक्षरों) की संख्या समान नहीं रहती है उन्हें विषयम कहे हैं– जैसे सौरभ, माधवी। जिन छंदों में पहले और तीसरे चरण में समान वर्ण तथा दूसरे और चौथे में समान वर्ण रहते हैं उन्हें अर्धसम वर्णिक कहते हैं।

14.3.4 प्रमुख वर्णिक छंद : लक्षण और उदाहरण

मालिनी : यह समवर्णिक छंद है। उसमें चारों चरणों में 15-15 वर्ण पाए जाते हैं। वर्णों का क्रम होता है

।।।, ।।।, SSS, ।SS, ।SS (नगण, नगण, मगण, यगण, यगण)।

बसंत तिलका : इस छंद के प्रत्येक चरण में 14 वर्ण या अक्षर होते हैं। इसका गणात्मक अनुक्रम है–

तगण (SS।) भगण (S।।) जगण (।S।), जगण (।S।) अंत में दो गुरु (SS)।

उदाहरण– SS ।S ।। ।S ।।S ।S S = 14

कुंजे वही, थल वही, जमुना वही है
बेलें वही, बन वही विटपी वही है।
हैं पुष्प पल्लव वही, ब्रज भी वही है,
ये किन्तु स्याम बिन हैं न वही जानते।

वंशस्थ : यह 12 वर्णों का छंद हैं अर्थात प्रत्येक चरण में 12 वर्णों का विन्यास रहता है। वर्ण क्रम है जगण (।S।) तगण (SS।) जगण (।S।) रगण (S।S)।

उदाहरण – ।S ।S S। ।S ।S।S

मिले बड़े भाग्य अहो मनुष्यता।
मनुष्यता में शुचि. शास्त्र योग्यता।।
सुयोग्यता में प्रिय काव्य कारिता।
सुकारिता में अति शक्ति साध्यता।।

इन्द्र वज्रा : इस छंद में प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। वर्णों का क्रम होता है– SS। (तगण), SS। (तगण), ।S। (जगण) अंत में दो गुरु (SS)।

उदाहरण – SS ।S S। । S। SS

पाके तुम्हें शेष न और पाना,
हो क्योंकि सारे सुख का खजाना।
होत तुम्हीं से नर पूर्ण काम,
हे रौश्य मुद्रे! तुझको प्रणाम।

उपेन्द्र वज्रा : इस छंद में भी प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं किन्तु वर्ण क्रम में अंतर होता है। इसमें क्रम है– ।ऽ। (जगण) ऽऽ। (तगण) ।ऽ। (जगण) अंत में दो गुरु वर्ण रखे जाते हैं।

उदाहरण – ।ऽ।ऽ ऽ ।। ऽ। ऽऽ

पखारते हैं पद पद्य कोई।
चढ़ा रहे हैं फल पुष्प कोई
करा रहे हैं पय पान कोई
उतारते श्रीधर आरती हैं।

भुजंगी : यह छंद भी प्रत्येक चरण 11 वर्णों से युक्त होता है। वर्णों के क्रम भेद से यह 11 वर्णों छंदों से अलग अपनी पहचान बनाता है।

उदाहरण– । ऽ ऽ।ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ = ।।

नहीं लालसा है विभो। वित्त की
हमें चेतना चाहिए चित्त की।
भले ही न हो एक भी संपदा
रहे आत्म विश्वास पूरा सदा।

मंदाक्रान्ता : इस छंद के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। वर्ण क्रम मगण (ऽऽऽ) भगण (ऽ।।), नगण (।।।), तगण (ऽऽ।), तगण (ऽऽ।) अंत में दो गुरु वर्ण है।

उदाहरण – ऽ ऽऽ ऽ ।।। ।।ऽ ऽ।ऽ ऽ। ऽऽ

दो वंशों में प्रकट करके पावनी लोकलीला।
सौ पुत्रों से अधिक जिनकी पुत्रियाँ पुण्यशीला,
त्यागी भी हैं शरण जिनके जो अनासक्त गेही,
राजा जोगी जय जनक वे पुण्य देही विदेही।

शिखरिणी : इस छंद के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं वर्णों का क्रम इस प्रकार होता है– ।ऽऽ (यगण), ऽऽऽ (मगण), ।।। (नगण), ।।ऽ (सगण), ऽ।। (भगण) अंत में लघु तथा गुरु वर्ण।

उदाहरण– ।ऽऽ ऽऽ ऽ ।।। ।।ऽ ऽ ।।। ऽ

अनूठी आभा से सरस सुषमा से सुरस से।
बना जो देती थी, गुण मयी भू विपिन को।
निराले फूलों की विविध दलवाली अनुपमा।
जड़ी बूटी ही हो, बहु फलवती श्री विलसती।।

BHDC-106.indd 184 19-03-2021 08:51:39

मनहरण कवित्त : इस छंद के प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं। चरण के अंत में एक गुरु वर्ण होता है। 8, 8, 8,7 वर्णों पर यति (विराम) होता है। इसे घनाक्षरी या कवित्त भी कहा जाता है।

उदहारण – हरित हरित हार, हेरत हियो हेरात
हरि हौं हरिन नैनी, हरि न कहूँ लहौं।
बनमाली ब्रज पर, बरसत बनमाली
बनमाली दूर दुध, केशव कैसे सहौं।
हृदय कमलनैन, देखि के कमलनैन
हो हुँगी कमलनैनी और हौं कहा हौं।
आप घने घनस्याम, घन ही ते होत, घन
सावन के द्यौस घन, स्याम बिनु क्यौं रहौं।

रूप घनाक्षरी : इसके प्रत्येक चरा में 32 वर्ण होते हैं। 8, 8, 8, 8 पर यति होती हैं अंत में गुरु–लघु वर्ण रखा जाता है।

उदाहरण– गोरे पायन सों, कढ़ि रही मंद मंद,
पायल औ घुँघुरू की, रसभरी झनकार।
कर बीच कंकन और करि बीच किंकिनी हूँ,
खनकि उठति संग पूरी करि बार–बार।
धारि जो सतार हाथ पास पास चलो जात,
आँगुरी चलाय रह्यो भूमि झनकार तार।
तार धरि तास अलबेली मृदु तान छाँड़ि।
गाय उठी गीत यह अंग गति अनुसार।

देव घनाक्षरी : उसके प्रत्येक चरण में 33 वर्ण होते हैं। 8, 8, 8, 9 पर विराम रहता है। चरण के अंत में नगण रखने का विधान है।

उदाहरण– लघि घनस्याम तन, मोर है मगन मन
सुमन सकल अलि गावहिं गुनन गुनन।
जीवनि को जीवनप्रदायक सबहि विधि,
नीचै वन सीकर सुधारन छनन छनन।

इसी तरह के चार चरण और होते हैं। कुल आठ चरणों का छंद होता है।

सवैया : कवित्त और सवैया रीतिकाल के अत्यंत प्रिय छंद रहे हैं। इसीलिए इनके अनेक भेद भी विकसित हुए। सवैया के तीन प्रमुख भेदों का परिचय दिया जा रहा है।

मदिरा : इस छंद में लगातार सात भगन (ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।) और अंत में एक गुरु वर्ण रहता है। उसके प्रत्येक चरण में 22 वर्ण होते हैं। हर छंद में चार चरण होते हैं।

BHDC-106.indd 185 19-03-2021 08:51:39

उदाहरण– ऽ। ।ऽ ।।ऽ ।।ऽ ।। ऽ ।। ऽ। ।ऽ । ।ऽ

सिंधु तर्‌यो उनको बनरा तुम पै घनु रेख गई न तरी।
बाँदर बाँधत सो न बँध्यो उन बारिधि बाँधि के बाटकरी।
श्री रघुनाथ प्रताप की बात तुम्हें दस कंठ न जानि परी।
तेलहु तूलहु पूँछ जरी न जरी जरि लंक जराइ जरी।

मत्त गयंद : इसमें कुल (प्रत्येक चरण में) 23 वर्ण होते हैं। सात भगण के बाद इसमें दो गुरु वर्ण रखे जाते हैं।

उदाहरण– दूलह श्री रघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मन्दिर माहीं।
गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि वेद जुवा जुरि विप्र पढ़ाही
राम को रूप निहारति जानकी कंगन के नग की परछाहीं।
यातै सबै सुधि भूलि गईं कर टेकि रही पल टारति नाहीं।

दुर्मिल सवैया : इसमें प्रत्येक चरण में 24 वर्ण होते हैं। इसमें लगातार आठ सगण (।।ऽ, ।।ऽ,।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।। ऽ,।।ऽ) आते हैं।

उदाहरण– पग नूपुर औ पहुँची कर कंजनि मंजु बनी मनि माल हिए।
नव नील कलेवर पीत झगा झलकै पुलकै नृप गोद लिए।
अरविन्द सो आनन रूप मरंद अनदित लोचन भृंग पिए।
मन में बस्यो अस बालक जो तुलसी जग में फल कौन जिए।।

14.4 काव्य में छंद का महत्व

कविता और छंद का घनिष्ठ संबंध है। पुराकाल में अधिकांश काव्य पद्यबद्ध होता था। पद्य की निर्मिति अनिवार्यतः छंदात्मक होती हैं छंदों का संबंध संगीत से भी है। कविता यदि छंदबद्ध रहती है तो उसमें संगीत और लय का सहज सन्निवेश हो जाता है। छंदात्मक कविता में विशेष तरह का प्रवाह एवं वर्णों या मात्राओं का सुनियोजित संतुलन होता है। भाव को व्यंजित करने में छंद की भी भूमिका होती है। अन्य काव्यांगों की तुलना में छंद का मनुष्य की भावनाओं से सीधा संबंध होता है। आचार्य भरत मुनि (जिन्होंने नाट्यशास्त्र की रचना की) मान्यता है कि छंद हीनों न शब्दोंडास्ति न छंद : शब्द वर्जितम् छंद से हीन कोई शब्द नहीं है और छंद शब्द से रहित नहीं है। शब्दों का विन्यास भी वर्णों तथा मात्राओं के निश्चित नियमों से जुड़ा है। मालावेग से ही महर्षि वाल्मीकि के मुख्य से अनुष्टुप छंद फूट पड़ा था। यहीं से लौकिक संस्कृत की कविता का आविर्भाव होगा। सुमित्रानंदन पंत ने इसी तथ्य की ओर इशारा करते हुए कहा है, वियोगी होता पहला कवि, आह से उपजा होगा गाना। भाव की तीव्रता से जो गान निकलता है वह छंदबद्ध ही होता है। वैदिक ऋषियों ने भावों के अनुकूल ही छंदों के प्रयोग किए हैं। संस्कृत के कवियों की प्रवृत्ति भी भावानुकूल छंद विधान की है। वेद की वाणी को हर विधि से मानक के अनुसार रक्षित करने की चिंता से वेदांगों की रचना की गयी। व्याकरण, शिक्षा, ज्योतिष, कल्प के साथ छंद को भी वेदांग माना गया। पाणिनि ने छंद को वेद का चरण कहा है। वेदों के संदर्भ में छंदों की महिमा अतिरंजित ढंग से निरूपित की गयी है। युगानुकूल छंदों में परिवर्तन तथा नए-नए छंदों की प्रतिष्ठा और संख्या वृद्धि से ही स्पष्ट है कि छायावाद (आधुनिक युग) के पूर्व छंद को कविता सुराठु शरीर समझा गया

था। आधुनिक काल के अनेक विद्वान, छंद को कविता का बंधन मानते हैं। लेकिन छायावादोत्तर काल में जो कविताएँ रची गयी हैं उनमें शब्दों की एक सुव्यस्थित लय है, एक निश्चित प्रवाह है। छंद मुक्त होकर भी उनमें विशेष तरह की छंदमयता है। डॉ. जगदीश गुहा ने तो शब्दलय के बदले अर्थ लय की भी परिचर्चा की है। छंद से भावों की अभिव्यक्ति में स्पष्टता तथा तीव्रता आती है। भाव सूचित होकर सघन हो जाते हैं। छंदबद्धता से रमणीयता तथा सौन्दर्य में वृद्धि होती है। छंदों के द्वारा कवि की पहचान बनती है। कोई-कोई कवि अपनी विशेष छंद रचना के कारण प्रसिद्ध हो जाता है। भाव-व्यंजना तथा रस निष्पत्ति के भी छंदों का योगदान रहता है। छंदबद्ध कविता आसानी से स्मरणीय हो जाती है।

14.5 छंद की विकास यात्रा

छंद का विकास वैदिक काल में ही हो गया था। उपलब्ध साहित्य की प्राचीनता के समकक्ष ही छंद की भी प्राचीनता सिद्ध होती है। छंदों का संबंध देवताओं से भी जोड़ा गया था। छंद की व्युत्पत्ति भी दैवी मानी गयी है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में कहा गया है कि पुरुष अर्थात् आदि पुरुष ब्रह्म से ही ऋक, यजु तथा साम की उत्पत्ति हुई है। लौकिक छंद का प्रस्फुटन भी महर्ष वाल्मीकि के तीव्र भावा वेग से हुआ जब उन्होंने देखा कि काम मोहित क्रौच युगल में से एक का बहोलिए ने बध कर दिया। ऋषि के मुख से जो अनुष्टुप छंद निकला उसकी वर्ण व्यवस्था तथा लय व्यवस्था पूर्ववर्ती छंद से भिन्न था। यही नहीं इसका विषय भी देवी-देवता की स्तुति या वर्णन नहीं था। निताना सामान्य जीव के प्रति करुणा की तीव्र अनुभूति थी। लौकिक संस्कृत का प्रथम श्लोक जो अनुष्टुप छंद का नया रूप था, इस प्रकार है–

मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंच मुथुना देककमधीः काम मोहितम्।।

वैदिक युग में छंद अक्षर गणना पर आधारित थे। गायत्री, उष्ठिक, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप, जग्ती सात प्रमुख छंद थे। इनके प्रभेद भी विकसित हो गए थे। संस्कृत में इन्द्र वज्रा, उपेन्द्र वज्रा, उपजाति, वसन्त तिलका, घनाक्षरी, मन्दाक्राना, आदि अनेक मात्रिक एवं वर्णिक छंदों का विकास हुआ। संस्कृत में छंदों की रचना गणात्मक हो गयी है। गण (तीन अक्षरों के समूह) होते थे। यद्यपि मात्राश्रित छंदों की परंपरा भी प्राचीन समय से चली आ रही थी किन्तु प्राकृत-अपभ्रंश काल में मात्रिक छंदों को अधिक महत्व मिला। गण विधान की तुलना में मात्रा विधान अधिक सरल था। पालि में संस्कृत की तरह ही वर्णिक छंदों का अधिक प्रयोग होता था। प्राकृत में जिस छंद की विशेष महत्ता मान्य हुई, वह छंद था गाथा (गाहा)। इस छंद में मुक्तक तथा प्रवंधात्मक दोनों प्रकार की रचनाएँ हुईं। अपभ्रंश काल में दूहा (दोहा) पद्धड़िया, रास, अडिला, ढोसा, रड्डा, चउपई, आदि अनेक छंद विकसित हुए। हिंदी साहित्य के आदिकाल में पारम्परिक छंदों का ग्रहण किया गया। इतना अवश्य है कि उनमें कुछ फेर-बदल भी हुआ। चंदबरदाई ने पृथ्वी राज रासो में 62 प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है। चन्द ने छप्पय का अधिक प्रयोग किया। आदिकाल के प्रमुख छंद हैं– दोहा, तोमर, गाथा, रोला, आर्या, पद्धरि, उल्लाला, छप्पय, भक्तिकाल में छंदों में गेयता को विशेष महत्व दिया गया। पदों में राग-रागिनियों के प्रयोग मिलते हैं। भक्तिकाव्य में सार, सरसी, कुण्डल, शोभन, मत्त सवैया, विष्णुपद, ताटंक, दोहा, मनहरण, चौपाई, हरि-गीतिका, रूपघनाक्षरी आदि अनक छंद प्रयुक्त हुए है। कवित्त सवैया तथा दोहा रीतिकाल के प्रिय छंद हैं। आधुनिक काल के प्रथम चरण में भारतेन्दु तथा उनके

BHDC-106.indd 187 19-03-2021 08:51:39

सहयोगियों ने प्राचनी तथा नवीन दोनों प्रकार के छंदों को जीवंत रखा। उर्दू के छंदों को भी काव्य में स्थान दिया। दोहा, रोला, सोरठा, चौपाई, पद्धिरि, छप्पय, रूपमाला आदि के अलावा लोक छंद लावनी, विरहा, रेखता, कजली, ख्याल को भी अपनाया गया। द्विवेदी युग में संस्कृत के वर्णिक छंदों को पुनः महत्व मिला। मैथिलीशरण गुप्त ने द्रुतविलम्वित, त्रोटक जैसे छंदों को भी टेक के द्वारा गये बनाया। अपभ्रंश काल से ही छंदों में लय (अन्त्यानुप्रास) को महत्व दिया जाने लगा था, वह परंपरा हिंदी में भी ग्रहण की गयी। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि गद्य, पद्य दोनों में कविता हो सकती है। छायावाद में निराला ने छंद के बंध तोड़ने की घोषणा की। प्रसाद और पंत दोनों ने मुक्त छंद में रचनाएँ की हैं। मुक्त छंद पूरी तरह छंद विहीनता नहीं है बलिक मात्रा और तुकों में किंचित परिवर्तन का उपक्रम है। छायावाद में मात्रिक दंदों की प्रधानता रही। निराला ने राम की शक्ति की पूजा में तीन अश्कों के संयुक्त प्रयोग किए हैं। प्रगति प्रयोगवाद तथा नई कविता में छंदों के प्रति नवीनता का आग्रह अधिक है। लयात्मक, प्रवाहमयता पर कवियों का विशेष ध्यान रहा है। छंद मुक्ति एक आंदोलन का रूप धारण किया। मुक्त छंद तथा मुक्त समानार्थी नहीं है। मुक्त छंद को स्वच्छंद छंद भी कहा जाता है। नई कविता में शब्दलय की अपेक्षा अर्थ लय पर बल दिया गया। इसमें मात्रा, गण विधान आदि की प्रायः उपेखा की गयी।

14.6 सारांश

छंद और कविता (पद्य) का घनिष्ठ संबंध है। वैदिक युग में छंद की महिमा अतिरंजित ढंग से बखानी गयी है। छंद की व्युत्पत्ति छंदि से हुई है जिसका तात्पर्य है, आच्छादन, बंधन, छिपना। कवि के भावों और विचारों को छंद आच्छादित करते हैं। मात्रा, वर्ण की निश्चित लयात्मक व्यवस्था ही छंद है। वैदिक युग अर्द्धरात्मक छंद थे। संस्कृत में मात्रिक और वर्णिक दोनों प्रकार के छंद मिलते हैं। प्राकृत का मुख्य छंद है (गाहा), अपभ्रंश में दूहा का महत्व मिला। हिंदी में कवित्त, सवैया तथा दोहा के अलावा राग-रागनियों से युक्त पदों की रचना हुई। ये पारंपरिक छंदों के ही गीतात्मक रूपांतरण थे। भारतेन्दु युग में कवित्त, सवैया के अलावा लोक प्रचलित छंदों– जैसे लावनी, प्यार, आल्हा, मुकरी को भी अपनाया गया। उर्दू की गजलों तथा अन्य छंदों को भी स्वीकृति मिली। द्विवेदी युग में खड़ी बोली की काव्य प्रतिष्ठा हुई फलस्वरूप संस्कृत के वर्णिक छंदों तथा पूर्ववर्ती मात्रिक दोनों प्रकार के छंदों का ग्रहण हुआ। अंग्रेजी के सानेट का भी आधुनिक युग प्रयोग हुआ है। छायावाद में मुक्त छंदों को अपनाया गया। प्रयोगवाद और नई कविता में पारंपरिक छंद-विधान से बहुत कुछ मुक्त होकर लय की महत्ता मान्य रही। कविता में गद्यात्मकता बढ़त्री। कुछ कवियों ने शब्द लय के स्थान पर अर्थ-लय की वकालत की।

14.7 अवधारणात्मक शब्द

पाद या चरण : छंद की एक पंक्ति को पाद या चरण कहते हैं, दोहा छंद दो चरण का तथा छप्पय छंद छः चरण का उदाहरण हैं।

मात्रा : ध्वनि के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं, इसका मतलब है समय की मात्रा। जिसमें एक पल लगता है वह लघु तथा जिसमें दो या अधिक पल लगते हैं उसे दीर्घ कहते हैं। लघु स्वर से युक्त व्यंजन भी लघु माने जाते हैं। दीर्घ स्वर से युक्त व्यंजन गुरु माने जाते हैं। ए, ऐ, ओ, औ, या दीर्घ स्वर है। उनके अलावा ई, ऊ, दीर्घ है।

वर्ण : एक पूर्ण ध्वनि को पूर्ण कहा जाता है, जैसे क, ह्रस्व तथा दीर्घ दोनों ही एक

ही वर्ण माने जाते हैं। संयुक्त व्यंजन भी एक ही वर्ण माना जाता है जैसे– क्व, स्य आदि। संयुक्ता व्यंजन के पूर्ण का व्यंजन दीर्घ माना जाता है– जैसे कर्म, विष्णु, इनमें क, वि की दीर्घ या गुरु माना जाएगा। उच्चारण के आधार पर भी लघु – गुरु मान लिया जाता है।

यति : छंद में प्रयुक्त विराम (हल्क ठहराव) को यति कहते हैं।

गति : छंद के प्रवाह को गति कहते हैं।

तुक : अन्त्यानुप्रास को तुक कहते है। चरण के अंत में समान वर्णों या मात्रा का आना तुक है–

आगे चले बहुरि रघुराई
ऋस्य मूक पर्वत निचराई

गण : तीन वर्णों के संघटन को गण कहते हैं। इनका निर्धारण दीर्घ दीर्घ दीर्घ, या दीर्घ ह्स्व-दीर्घ आदि प्रकार से होता है। गण का सूत्र है– यमाताराजमान सलगम सूत्र का एक-एक वर्ण लेते जाइए तथा अगला दो वर्ण जोड़ लीजिए– जैसे–

यगण = यमाता ।SS

मगण = मताश SSS

14.8 उपयोगी पुस्तकें

भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा, प्रो. योगेन्द्र प्रसाद सिंह

आधुनिक हिंदी काव्य में छंद योजना, प्रतूलाल शुक्ल

छंदोदर्पण, गौरी शंकर मिश्र द्विजेन्द्र

समकालीन कविता में छंद। सं. सच्चिदानंद, हीरानंद वात्सल्यन अज्ञेय

14.9 बोध प्रश्न

1) छंद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2) छंद की विकास यात्रा की चर्चा कीजिए।

3) प्रमुख मात्रिक छंदों का परिचय दीजिए।

4) प्रमुख वर्णिक छंदों का परिचय दीजिए।

14.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) देखिए भाग - 14.2

2) देखिए भाग - 14.5

3) देखिए उपभाग - 14.3.2

4) देखिए उपभाग - 14.3.4

BHDC-106.indd 189 19-03-2021 08:51:39

नोट्स

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

IGNOU SOCIAL MEDIA

QR Code -website ignou.ac.in

QR Code -e Content-App

QR Code - IGNOU-Facebook (@OfficialPageIGNOU)

QR Code Twitter Handel (OfficialIGNOU)

INSTAGRAM (Official Page IGNOU)

QR Code -e Gyankosh-site

QR Code generated for quick access by Students

IGNOU website

eGyankosh

e-Content APP

Facebook (@offical Page IGNOU)

Twitter (@ Offical IGNOU)

Instagram (official page ignou)

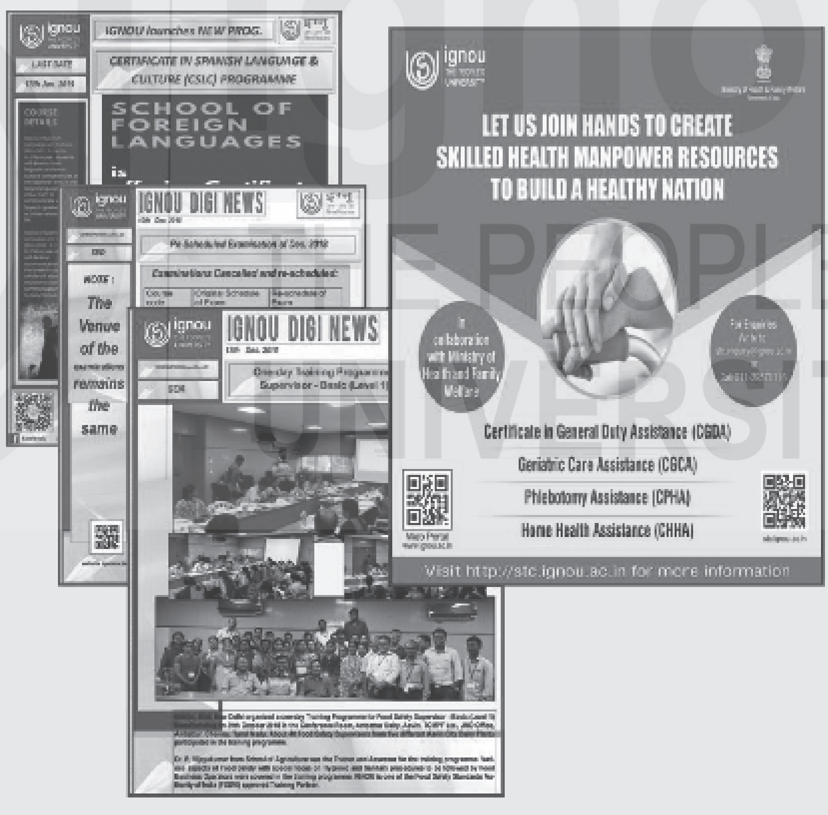

Like us, follow-us on the University Facebook Page, Twitter Handle and Instagram

To get regular updates on Placement Drives, Admissions, Examinations etc.

MPDD/IGNOU/P/O/ 00K / JANUARY, 2021

ISBN : 000-00-00000-00-0